अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे | अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दें। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) वस्तु के विशेष धर्म को जानना कहलाता है-

(क) ज्ञान (ख)दर्शन

(ग) चारित्र (घ) तप ( )

(b) किस कर्म के प्रभाव से जीव विविध पर्यायों का अनुभव करता है-

(क) मोहनीय कर्म (ख) नाम कर्म

(ग) अन्तराय कर्म (घ) गौत्र कर्म ( )

(c) मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ होती है-

(क) 5 (ख) 2

(ग) 28 (घ) 103 ( )

(d) किस कर्म का अबाधाकाल नहीं होता है-

(क) ज्ञानावरणीय (ख) अन्तराय

(ग) आयु (घ) गौत्र ( )

(e) छठी नरक की आगति होती है-

(क) 16 (ख) 40

(ग) 18 (घ) 17 ( )

(f) पहले किल्विषी की आगति होती है-

(क) 40 (ख) 50

(ग) 30 (घ) 46 ( )

(g) गर्भज की गति होती है-

(क) 371 (ख) 563

(ग) 395 (घ) 285 ( )

(h) मिश्र गुणस्थान में कितने योग होते हैं-

(क) 6 (ख) 7

(ग) 3 (घ) 10 ( )

(i) अरूपी के भेद है-

(क) 15 (ख) 30

(ग) 61 (घ) 12 ( )

(j) उपयोग के थोकड़े का उल्लेख श्री भगवती सूत्र के किस शतक में किया गया है-

(क) 13वें शतक में (ख) 14वें शतक में

(ग) 12वें शतक में (घ) 10वे शतक में ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) आयु कर्म आत्मा के अमरत्व गुण को प्रकट नहीं होने देता है। ( )

(b) नपुंसक वेद कषाय मोहनीय का एक भेद है। ( )

(c) न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान का एक भेद है। ( )

(d) असातावेदनीय कर्म 12 प्रकार से बांधा जाता है। ( )

(e) देवगति के 198 भेद होते हैं। ( )

(f) समुच्चय जीव की आगति 563 होती हैं। ( )

(g) बलदेव की गति अमर होती है। ( )

(h) 14वें गुणस्थान में योग नहीं पाया जाता है। ( )

(i) पुद्‌गलों के चौस्पर्शी और अष्टस्पर्शी दो भेद होते हैं। ( )

(j) सातवी नारकी में जीव 3 अज्ञान लेकर जाते हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	हड्डियों का स्तंभ	(क) गौत्र कर्म	....
(b)	जुगुप्सा	(ख) अप्रत्याख्यानी	....
(c)	विसंवाद रहितता	(ग) 6	....
(d)	2 हजार वर्ष	(घ) बुद्धि	....
(e)	उरपरिसर्प	(च) नो कषाय	....
(f)	5 ऐरण्यवत	(छ) तिर्यंच पंचेन्द्रिय	....
(g)	सर्वार्थसिद्ध आगति	(ज) 12	....
(h)	लेश्या	(झ) 15	....
(i)	कार्मिकी	(य) अकर्मभूमिज	....
(j)	उपयोग	(र) शुभ नाम कर्म	....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मेरे प्रभाव से जीव आत्मा के अनन्त आत्म सामर्थ्य नामक गुण की घात करता है। ....

(b) मेरी एक उत्तर प्रकृति स्त्यानगृद्धि है। ....

(c) मेरा अबाधाकाल होता भी है और नहीं भी होता है। ....

(d) मेरी आगति 32 की तथा गति 14 की है। ....

(e) मेरी आगति 38 की तथा गति मोक्ष है। ....

(f) मेरा अपर्याप्त अवस्था में ही मरण हो जाता है, अतः मेरा पर्याप्ता भेद नहीं होता। ....

(g) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें योग के 7 भेद पाये जाते हैं। ....

(h) मैं लेश्या का एक भेद हूँ, जो 8वें से 13वें गुणस्थान में भी पाया जाता हूँ। ....

(i) मैं ज्ञान का एक भेद हूँ, तथा मेरे उपभेद अवग्रह, ईहा, अवाय धारणा है। ....

(j) मैं एक ऐसा भंग हूँ, जो अरूपी द्रव्यों एवं चतुस्पर्शी पुद्गलों में ही पाया जाता है। ....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) नो कषाय मोहनीय की उत्तर प्रकृतियाँ लिखिए।

....

....

....

(b) आयु कर्म किसे कहते हैं ?

....

....

....

(c) नरकायु के चार कारण लिखिए।

....

....

....

(d) अशुभ नामकर्म के बंध के चार कारण लिखिए।

....

....

....

(e) वेदनीय कर्म की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

....

....

....

(f) पहले किल्विषी की आगति एवं गति समझा करके लिखिए।

....

....

....

(g) आराधक साधुजी की आगति एवं गति लिखिए।

....

....

....

(h) माण्डलिक राजा की आगति एवं गति लिखिए।

....

....

....

(i) बासठिया के अन्तर्गत 61 बोल कौन-कौन से होते हैं ?

....

....

....

(j) अष्टस्पर्शी रूपी के 15 भेद लिखिए।

....

....

....

(k) बुद्धि के चार भेद लिखिए।

....

....

....

(l) पाँच अनुत्तर विमान में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?

....

....

....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) मोहनीय कर्म किसे कहते हैं? यह कर्म आत्मा के किस गुण का घात करता है ?

....

....

....

....

....

(b) कषाय मोहनीय की सोलह प्रकृतियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

(c) त्रस दशक एवं स्थावर दशक के भेदों के नाम लिखिए।

....

....

....

....

....

(d) अशुभ नाम कर्म का उदय कितने प्रकार से होता है ? उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

(e) निम्न कर्मों की जघन्य, उत्कृष्ट, स्थिति एवं अबाधाकाल लिखिए-

1. दर्शनावरणीय 2. नामकर्म 3. अन्तराय कर्म।

....

....

....

....

....

(f) मनुष्य गति के 303 भेद लिखिए।

....

....

....

....

....

(g) इक्कावन जाति के देवता की आगति एवं गति का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कौन-कौन से जीव कौन-कौन सी नारकियों में उत्पन्न हो सकते हैं ?

....

....

....

....

....

(i) **पहले, तीसरे एवं छठे गुणस्थान में योग, उपयोग एवं लेश्या का उल्लेख कीजिए।**

....

....

....

....

....

(j) **अरूपी के 61 भेद लिखिए।**

....

....

....

....

....

(k) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?**

....

....

....

....

....

(l) **मिथ्यादृष्टि व मिश्रदृष्टि की आगति लिखिए।**

....

....

....

....

....